# 6

# भारतीय ज्ञान परम्परा और विश्व कल्याण

*डॉ. भुपेन्द्र कौर*
*सहायक प्राध्यापक, शिक्षाशास्त्र विभाग, आईएफटीएम विश्वविद्यालय, मुरादाबाद, उ0प्र0, (भारत)*

**सार**

हमारा भारत देश एक महान् देश कहा जाता है। हमारे देश के ज्ञान की अविरल धारा ने संपूर्ण जगत को अपने अपनी ओर आकर्षित किया है। प्राचीन काल से ही भारत का ज्ञान काफी समृद्ध रहा है। आधुनिक युग में प्रचलित भारतीय ज्ञान वर्तमान हो रही नवीन खोज जो विदेशो से आ रही है को हमारे प्राचीन ग्रन्थों में पूर्व में ही उल्लेखित किया है। जो कि भारतीय ज्ञान परम्परा के समृद्ध होने को प्रमाणित करता है। कुछ शताब्दियों पहले से यह बात महसूस करायी जाती है कि भारत में कभी ज्ञान अंकुरित हुआ ही नही है। इसलिए अब समय है भारत के ज्ञान रूपी वृक्ष की छाया में पनप रहे विश्व को बताने का कि भारत में गुरूत्व अभी भी कायम है। भारत का ज्ञान गंगाजल के समान निर्मल और अविराम है।

मैकॉले एवं अन्य दार्शनिक अवाज उठाते है कि भारत से विश्व को क्या मिला और हमें यह बोध कराया जाता है कि पाश्चात्य देशों से ही भारत को सब कुछ मिला। भारत ने विश्व को ज्ञान-विज्ञान की प्रणाली दी, अनेक आयाम दिए। अब भारतीय ज्ञान के लिए चिन्तन और चिन्ता का विषय है। वर्तमान समय में लोगों में डिप्रेशन, मेंटल स्ट्रेस जैसे शब्दो का प्रयोग काफी बढ गया है, जिसकी वजह है आज की युवा पीढी विदेशी सभ्यता और जीवन शैली को अपनाने के साथ-साथ इन शब्दों को भी अपने जीवन में शामिल कर चुकी है। लेकिन वैदिक भारत में इस प्रकार की मनोवृत्ति नही देखी जाती थी।

**प्रस्तावना**

सारी दुनिया में हिन्दू ज्ञान और दर्शन प्रसिद्ध रहा है। यहाँ ज्ञान को पवित्र विषय के रूप में माना गया है। ज्ञान के सभी रहस्यों का अनावरण होता रहा है। ज्ञान से धर्म की साधना होती है। ज्ञान से अर्थ, काम और मोक्ष प्राप्त होता है। हिन्दू ज्ञान अभीप्सु राष्ट्रीयता हैं। जडों के उखडे वक्षों पर फल, फूल नही लगते, पक्षी ऐसे वक्षों पर गीत नही गातें।

यूजीसी ने नई शिक्षा नीति के अनुसरण में भारत की ज्ञान परम्परा को छात्रों एवं अध्यापकों के लिए मार्गदर्शी बताया है। नई शिक्षा नीति में भारत को मूल से जोडने का कार्यक्रम बनाया है। ज्ञान का उददेश्य सूचना पाना ही नही अपितु ज्ञान, विज्ञान और दर्शन में विश्व कल्याण की प्रतिभूति है। भारत में ऋग्वेद के रचना काल से पूर्व ही लोकमंगल हितैषी ज्ञान परम्परा है। स्थूल और अति सूक्ष्म पदार्थो के अणुओं का अध्ययन प्राचीन काल से ही होता रहा है। व्यक्ति जगत के साथ-साथ अव्यक्ति जगत का ज्ञान भी पूर्वजों का पसंदीदा विषय रहा है। ज्ञान के प्रारम्भ से ही गहन ज्ञान मीमांसा रही है। ऋग्वेद के ज्ञान सूक्त 10.71 में इसी परिस्थिति का उल्लेख है, 'प्रारम्भिक दशा में पदार्थे का नाम रखा जाता है। यही ज्ञान का प्रथम चरण है। इनका दोष रहित ज्ञान पदार्थो का गुण, धर्म आदि अनुभूति की गुफा में छुपा रहता है और अंत:प्रेरणा से ही उदभव होता है।' पहले रूप और रूप का सामान्य ज्ञान इसके बाद गुण धर्म।

वैदिक काल ज्ञान दर्शन के अरूणोदय का काल है। जिज्ञासा एवं प्रश्न सशक्त ज्ञान उपकरण हैं। ज्ञान दर्शन की यही परम्परा ऋग्वेद सहिता चार वैदिक संहिताओं में विश्व की पहली ज्ञान सारिणी है। फिर उत्तर वैदिक काल में उपनिषद दर्शन है। यही ज्ञान परम्परा बुद्ध व जैन दर्शनों में सम्माननीय है। ज्ञान प्रकट करने का प्रथम उपकरण वाणी है और वाणी का अनुशासन व्याकरण है। ज्ञान की इसी परम्परा में दुनिया का पहला व्याकरण पाणिनि लिखा गया। इससे पहले यास्क वैदिक भाषा के अनुशासन पर व्याकरण लिखते थे। पतंजलि योगसूत्र एवं भाषा अनुशासन लिखते हैं। योग विज्ञान अंतरराष्ट्रीय है। 'दि वंडर वाज इंडिया' में लंदन के विद्वान एल. बाशम ने भारतीय योग विज्ञान का उल्लेख किया था। दुनिया का पहला अर्थशास्त्र भारत के कौटिल्य ने लिखा, आचार्य वात्सयायन ने कामसूत्र और पहला नाटयशास्त्र भरतमुनि के द्वारा लिखा गया। इसी ज्ञान परम्परा में चरक और सुश्रुत संहिताएं आयुर्विज्ञान के रूप में प्रतिष्ठित हुई।

पाणिनि, पतंजलि, कौटिल्य, आचार्य वात्सयायन, भरतमुनि, चरक, सुश्रुत आर्यभटट, वराहमिहिर सभी विद्वान अपने पूर्ववर्ती आचार्यो का उल्लेख करते हैं। वे अपने कथन को प्राचीन ज्ञान परम्परा से जोडते हैं। विज्ञान के विकास के लिए गणित का विशेष महत्व होता है। एन्साइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका में कहा गया कि शून्य के अंक का आविष्कार संभवत: हिन्दूओं ने किया था। शून्य और शून्य के स्थानगत मूल्यों की जानकारी वैदिक काल में थी। विवाह संस्था का जन्म वैदिक काल में ही हुआ। प्राचीन काल में गीत, संगीत, चित्रकला और स्थापत्य सहित सभी ज्ञान अनुशासन फल फूल रहे थे। लेकिन काल परिस्थिति के प्रवाह में यह ज्ञान परम्परा टूट गई।

ब्रिटिश सरकार के समय भारतीय ज्ञान परम्परा पर सुनियोजित आक्रमण हुए। पश्चिमी ज्ञान एवं सभ्यता का प्रभाव बढा। यहाँ के विद्यालयों में पश्चिम की प्रशंसा और भारतीय

ज्ञान को उससे कम बताया और पढाया जाने लगा। इतिहास का विरूपण हुआ। वेदों को चरवाहों के के गीत कहा गया। भारतीय दर्शन को उडान कहा गया। ब्रिटिश विद्वान और उनके समर्थन में रहे भारतीय विद्वानों ने भी दावा किया कि ब्रिटिश शासन से पहले हम भारतीय एक राष्ट्र नही थे। ब्रिटिश सरकार ने ही राष्ट्र बनया है। गाँधी जी ने इसका खंडन करते हुए कहा कि ब्रिटिश सत्ता भारत को असभ्य बता रही थी। उन्होंने ब्रिटिश संसद को विश्व संसदों की माता (जननी) बताया है। ब्रिटिश संसद के खिलाफ गाँधी जी ने तीखी टिप्पणी की। जबकि हजारों वर्ष पहले वैदिक काल में सभा हुआ करती थी। समितियां, राजव्यवस्था हुआ करती थी। राजा का निर्वाचन हुआ करता था। लोग हिन्दू ज्ञान, विज्ञान व दर्शन से समृद्ध थे। आश्रम व्यवस्था थी जिसमें दर्शन, गणित, ज्योतिष व विज्ञान का अध्ययन था।

यूरोपीय विद्वानों ने भारतीय कला और सौंदर्यबोध को भी हेय बताया। नाटयशास्त्र नाटक को भरतमुनि ने विश्व के लिए उपयोगी बताया था, 'यह नाटय संसार में वेदों, विद्याओं और इतिहास की गाथाओं की परिकल्पना करने वाला लोगों के मनोविनोद का भी कर्ता होगा कहा गया था।' नाटयशास्त्र परिपूर्ण कला है। भरतमुनि ने कहा कि इस नाटक में समस्त लोकों का अनुकीर्तन होता है। भरतमुनि ने नाटक के अभिनय पक्ष की प्रशंसा की। यूनानी दार्शनिक प्लेटो ने नाटक के अभिनय पक्ष पर ध्यान नहीं दिया। भरतमुनि ने संगीत और नृत्य परम्परा का भी उल्लेख किया है। यहाँ गीत संगीत आदि कलाओं के साथ नृत्य की भी परम्परा रही है। महाभारत और रामायण विश्व के प्रतिष्ठित महाकाव्य हैं। महाभारत में अर्जुन अज्ञातवास के समय गीत, संगीत और नृत्य सीखते हैं, और श्री कृष्ण जैसे बांसुरी वादक नाचता देवता दुनिया में किसी भी सभ्यता संस्कृति में नही मिलता जिसका उल्लेख वाल्मीकि ने रामायण में किष्किंधा नगरी के नृत्य का किया है। वैदिक काल से प्रारम्भ ज्ञान परम्परा महाभारत और रामायण में भी सांस्कृतिक निरंतरता में हैं।

वैदिक काल में भारत में सभी कलाओं का विस्तार हो चुका था। भरत ने नाटयशास्त्र में लिखा है कि, नाटक में पाठय अंश ऋग्वेद से आया है। गीत वाला अंश सामवेद से व रसों को अर्थवेद से लिया गया है। नाटयशास्त्र में नारद व स्वाति के नाम है। स्वाति के विषय में लिखा है कि, 'कमलपत्रों पर वर्षा की बूदों से होने वाली धुन को सुन कर उनके मन में वाद्य निर्माण का विचार आया था।' भरत ने नाटय और संगीत से जुडे तमाम यंत्रों का उल्लेख किया है, गीत, संगीत की चर्चा है। यह सब यूनानी दर्शन में नही मिलता। ऋषि सूर्योदय से पहले ऊषा देखते हैं। कहते है 'ऊषाएं सौन्दर्य प्रकट करती हैं। यह नित्य नवीन होती हैं।' भारतीय दर्शन में जो सुन्दर है वह सत्य है और जो सत्य है वह शिव है। सुकरात ने सुन्दर और शिव को एक बताया था। प्लेटो ने कहा कि सुन्दर परम और पूर्ण है। सुन्दर का नैतिक होना आवश्यक है। दार्शनिक प्लाटिनस ने सौदर्य को रहस्य

पूर्ण बतलाया था। योगी अरविन्द ने यूरोपीय एवं भारतीय कला का भेद बताते हुए लिखा था, 'पश्चिमी मानस रूप के आकर्षण जाल में है। वह रूप सौन्दर्य के कारण उसके प्रति आसक्त रहता है। भारतीय दष्टि से रूप आत्मा का सृजन है।'

सौन्दर्य की भावना एकाग्रता लाती है। अभिनव गुप्त ने इसे बीत विघ्रा प्रतीति कहा। प्राचीन भारतीय कला के साक्ष्य ऋग्वेद में है। संगीत के सात सुरों की चर्चा है, सामवेद ज्ञान गान है। यजुर्वेद में भी छंद विधान है। अथर्ववेद में पूरा संसार है। सौन्दर्यशास्त्री केएस रामास्वामी ने 'इडियन एस्थेटिक्स' में लिखा था, भारत में सौन्दर्य शास्त्र की हजारों वर्ष पुरानी ज्ञान परम्परा है।' गीता के अध्याय 4 में श्री कृष्ण ने अर्जुन को ज्ञान परम्परा बताई, 'यह प्राचीन ज्ञान मैंने विवस्वान को बताया था। विवस्वान ने मनु को और मनु ने इक्ष्वाकु को बताया थ। परम्परा के आधार पर ही यह ज्ञान ऋषि जानते आए हैं। काल प्रवाह में यह ज्ञान नष्ट हो हो गया। हे अर्जून, वही पुरातन ज्ञान मैं तुमको बता रहा हूँ। भारतीय ज्ञान परम्परा में लोकहित के सभी विषय सम्मिलित हैं।

भारतीय ज्ञान परम्परा पुरातन युग से बहुत समृद्ध रहीं है। आधुनिक युग में प्रचलित भारतीय ज्ञान और विदेशों से आ रहीं तथा कथित नवीन खोज जो हमारे ग्रन्थों में पूर्व से ही उल्लेखित है, भारतीय ज्ञान परम्परा के समृद्धशाली होने का प्रमाण है। बीती शताब्दियों में भारत को यह महसूस कराया जा रहा है कि भारत में ज्ञान कभी अंकुरित हुआ ही नही। सैकडों वर्ष हमारी पीढी ने दासता की जंजीरों में पीढा झेलते हुए भी इस ज्ञान को सजोकर रखा। लेकिन समय के साथ इसकी उपादेयता क्षीण होती रहीं। "यह सम्पूर्ण जगत ब्रह्म की ही प्रतिकृति है। एक मात्र चेतन, नित्य और मूल सत्ता जो अखंड, अनंत, अनादि, निगुर्ण और सत, चित् तथा आनंद से युक्त है। प्रत्येक तत्त्व और प्रत्येक वस्तु के कण-कण में ब्रह्म की व्याप्ति मानी जाती है, और कहा जाता है कि अन्त या नशा होने होने पर सबका इसी ब्रहा में लय होता है।" इसे ही हम एकात्म की भावना जानते है, जो संपूर्ण विश्व को एक सूत्र में बांधने की क्षमता रखती है। जब कोई व्यक्ति इस सत्य को जान लेता है तो अध्यात्म जुडे रहने के कारण आधुनिक पाश्चात्य अधोगति में नहीं पडता। इससे हमें भारतीय ज्ञान परम्परा कि उपादेयता के एक आयामक का ज्ञान होता है। यह सिर्फ एक दर्शन का उदाहरण है, संपूर्ण भारतीय ज्ञान प्रणाली ऐसे अनंत सत्य से पूर्ण है, जो पूर्णमद: पूर्णमिदं की बात करती हैं। यह एक प्रणाली हैं जिसका अस्तित्व यच्चन्द्रमसि यच्चाग्नौ है।

भारत ने विश्व को संस्कृति दी, 5000 साल पहले कई सभ्यताएं केवल खानाबदोश वनबवसी थीं, तब भारतवर्ष में सिधु घाटी सभ्यता में हडप्पा संस्कृति का जन्म हुआ। विश्व का पहला विश्वविद्यालय तक्षशिलामें 700 ईसा पूर्व में स्थापित किया, जिसमें दुनिया भर के 10,500 से अधिक छात्रों ने 60 से अधिक विषयों का अध्ययन किया। चौथी शताब्दी ईसा पूर्व में निर्मित नालंदा विश्वविद्यालय शिक्षा के क्षेत्र में भारत की सबसे बडी

उपलब्धियों में से एक था। भारत ने ही विश्व को देव भाषा संस्कृत दी जो कि विश्व की सबसे शुद्ध एवं उपयुक्त भाषा है।

संस्कृत सभी यूरोपीय भाषाओं की जननी है। कंप्यूटर सॉफटवेयर के लिए संस्कृत सबसे सबसे उपयुक्त भाषा है।-फोर्ब्स पत्रिका की रिपोर्ट, जुलाई 1987 भारतीय सभ्यता ने ज्ञान को बहुत महत्व दिया है, जैसा कि इसके आश्चर्यजनक रूप से विशाल बौद्धिक ग्रन्थों, दुनिया में पांडुलिपियों के सबसें बडे संग्रह और विभिन्न प्रकार के ग्रन्थों विचारकों और विद्यालयों की अच्छी तरह से प्रलेखित विरासत से पता चलता है। भारत में ज्ञान का एक इतिहास है जो गंगा की धारा के समान निरंतर जारी है। वेदों उपनिषदों से लेकर श्री अरबिदों तक, ज्ञान सभी शोधों का केन्द्र बिंदू रहा है। भारतीय ज्ञान प्रणालीयों की भारतीय संस्कृति, दर्शन और और आध्यात्मिकता में एक मजबूत नींव है और यह हजारों वर्षों से विकसित हुई है। आयुर्वेद, योग, वेदान्त और वैदिक विज्ञान सहित ये ज्ञान प्रणालीयाँ आधुनिक दुनिया में अभी भी उपयोगी हैं। भारतवर्ष ने विश्व को आयुर्वेद दिया। आयुर्वेद मनुष्यों के लिए ज्ञात चिकित्सा का सबसे पहला स्कूल है। चिकित्सा के जनक चरक ने 2500 साल पूर्व आयुर्वेद को समेकित किया। आज आयुर्वेद तेजी से हमारी सभ्यता में अपना सर्वोच्च स्थान हासिल कर रहा है। आधुनिक युग में आयुर्वेद का उदाहरण करोना महामारी के समय देखा आयुर्वेद के नाम से ज्ञात पारंपरिक भारतीय चिकित्सा प्रणाली में कल्याण के लिए व्यापक दृष्टिकोण पर जोर दिया गया। इस समय की दुनिया में जहां जीवन-संबंधी स्थितियां बढ रही है, यह प्राकृतिक सुधार के तरीकों, वैयक्तिकृत उपचारों और वनों की रोकथाम और स्वास्थ्य के संरक्षण पर ध्यान देने की बात करता है। शल्य चिकित्सा के जनक सुश्रुत हैं। 2600 साल पूर्व उन्होंने और समय के स्वास्थ्य वैज्ञानिकों ने सिजेरियन, मोतियाबिन्द, कृत्रिम अंग, फ्रैक्चर, मूत्र पथरी और यहाँ तक की प्लास्टिक सर्जरी और मस्तिष्क की सर्जरी जैसी अनेक प्रकार की चिकित्साओं के उदाहरण हमारे सामने पेश किये। 130 से अधिक सर्जिकल उपकरणों का इस्तेमाल किया गया। कई ग्रन्थों में एनाटॉमी, फिजियोलॉजी, भ्रणविज्ञान, पाचन, चयापचय, आनुवंशिकी और प्रतिरक्षा का गहरा ज्ञान भी मिलता है।

भारतीय ज्ञान परम्परा का योग अभिन्न अंग है। योग आंतरिक, शारीरिक और आध्यात्मिक कल्याण के लिए एक व्यापक दृष्टिकोण है जिसकी जडे प्राचीन भारत में हैं। इसमें आसन, प्राणायाम और चिंतन जैसे तरीके शामिल हैं जो तनाव को कम करने, आंतरिक स्वास्थ्य को बढावा देने और सामान्य हदयता को बढाने में मददगार साबित हुए हैं। ये तरीके वर्तमान समय की पूर्व-निर्धारित, तनावपूर्ण वास्तविकता में विशेष रूप से महत्वपूर्ण हैं।

भारतीय ज्ञान प्रणालियों में "वसुधैव कुटुंबकम" के विचारों से सभी प्राणियों की परस्पर निर्भरता पर जोर दिया है। पर्यावरण विषय और प्राकृतिक संसाधन संरक्षण एवं

उसकी मांग को ध्यान में रखते हुए, ये सिद्धान्त अधिक महत्वपूर्ण होते जा रहे है। वास्तविकता की प्रकृति में आध्यात्मिक विकास एवं चौतन्यता वेदान्त जैसी भारतीय ज्ञान प्रणालियों द्वारा प्रदान किए जाते हैं, जो वेदों के नाम से जानी जाने वाली प्राचीन पुस्तकों पर आधारित एक दार्शनिक स्वरूप हैं विज्ञान ऐतिहासिक रूप से भारतीय ज्ञान प्रणालियों द्वारा गणित, खगोल विज्ञान और धातु विज्ञान जैसे विषयों में उन्नत हुआ है। शून्य, दशमलव प्रणाली एवं त्रिकोणमिति जैसी प्राचीन भारतीय सामान्यताओं का उपयोग अभी भी वर्तमान ज्ञान और प्रौद्योगिकी में बडे पैमाने पर किया जाता है, जो आविष्कार और उन्नति को बढावा देने में भारतीय ज्ञान प्रणालियों के महत्व को प्रदर्शित करता है।

सिंचाई की बात करे तो सबसे पहला जलाशय और बांध सौराष्ट्र में बनाया गया था चंद्रगुप्त मौर्य के समय रैवताका की पहाडियों पर 'सुदर्शन' नामक झील का निर्माण किया गया था। जो सम्पूर्ण विश्व के लिए उदाहरण है।

जेमोलॉजिकल इंस्टीटयूट ऑफ अमेरिका के अनुसार, 1896 तक, दुनिया के लिए हीरे का एक मात्र स्त्रोत भारत था। संयुक्त राज्य अमेरिका स्थित प्म्म् द्वारा विश्व वैज्ञानिक समुदाय ने सिद्ध कर दिया कि बिना तार के संचार प्रकाशीय तंतु के प्रणेमा मारकोनी नही प्रोफेसर जगदीश बोस है।

भारतीय ज्ञान परम्परा में मन्दिरों की वास्तु कला भी प्रमुख स्थान रखती है। भारतीय मन्दिर वास्तुकला भी आधुनिक युग में किसी चमत्कार से कम नहीं है। भारत के कई मन्दिर वास्तुशिल्प महत्वकांक्षा के आश्चर्यजनक उदाहरण के साथ-साथ अधिकांश जटिल नक्काशी और प्रतीकों से सजाए गए हैं। जैसे-ऐरावत मन्दिर दारासुरम शहर में द्रविड वास्तुकला का मन्दिर जो कि शिव को समर्पित है। पत्थर के मन्दिर में एक रथ संरचना शामिल है, और इसमें इंद्र अग्नि, वरूण, बह्मा सूर्य विष्णु जैसे प्रमुख वैदिक और पौराणिक देवता शामिल हैं। बृहदेश्रवर मन्दिर, जो कि शिव को समर्पित हैं, जो भारत के तमिलनाडु राज्य के तंजपुर में स्थित है। इसे राजराजेश्रवर मन्दिर के नाम से भी जाना जाता है, यह भारत के सबसे बडे मन्दिरों में से एक है। यह मन्दिर तमिल वास्तुकला का एक उदाहरण है। महाबलीपुरम के गुफा मन्दिरों में समृद्ध सजावट का उपयोग किया गया है, जो कि सीधे चटटानों में उकेरी गई है। भारतवर्ष की ज्ञान भूमि को अलंकरण करने में ऐसे अनंत उदाहरण जो आधुनिक युग की विज्ञान से भी परे है हमारे वास्तु कला के शोध प्रेमियों के लिए खोज का विषय है।

हालांकि भारत की आधुनिक छवि में अक्सर गरीबी और विकास की कमी दिखायी देती हैं, 17वीं शताब्दी की शुरूआत में ब्रिटिश आक्रमण के समय तक भारत पृथ्वी पर सबसे अमीर देश था इसी लिए इसे भारत को सोने की चिडिया कहा जाता था, यह भारत की अखंड ज्ञान परम्परा के कारण था। क्रिस्टोफर कोलंबस भारत के ज्ञान से आकर्षित थे।

## निष्कर्श

इस प्रकार भारत ने विश्व को अनेक प्रकार से योगदान देकर लाभान्वित किया। भारत ने ही विश्व को बौद्ध, जैन और सिख पंथ दिए। भारत ने विश्व को गुरू शिष्य परम्परा दी जिसके माध्यम से वर्षो तक अर्जित ज्ञान को आत्मसात और विश्लेषण करके नये ज्ञान को संश्लेषित किया गया। भारतीय ज्ञान प्रणाली आज के परिदृश्य में भी लागू है, जो तनाव प्रबन्धन, स्थिरता आदि जैसे मुद्दों से निपटने के लिए व्यावहारिक सुझाव देती है। यह ज्ञान का एक विशाल भंडार प्रदान करती है जिसका उपयोग लोगों, समुदायों तथा मानव के कल्याण और उनको आगे बढने के लिए किया जाता सकता है। अब समय है भारत के द्वारा विश्व को दिए ज्ञान को सजोकर इसका प्रचार व प्रसार किया जाये। भारत वर्ष की जनता को भारतीय संस्कृति, पहचान और प्राप्त ज्ञान से जोडा कर उस ज्ञान की उपादेयता करनी होगी। ये सन्तोष की बात है कि नई शिक्षा नीति गहनता के साथ इन विसंगतियों से रूबरू होते हुए विषयगत, प्रक्रियागत एवं संरचनागत बदलाव की दिशा में अग्रसर हो रही है। वर्ष से बंधक पडी सरस्वती को भी छुडाना आवश्यक है। भारतीय ज्ञान परम्परा और संस्कृत समेत सभी भारतीय भाषाओं को लंबे समय से पराभव में रखा जाता रहा है। आशा की जाती है कि नई शिक्षा नीति उनके साथ न्याय कर सकेगी। साथ ही हम सभी का कर्त्तव्य बनता है कि भारत वर्ष की इस अनमोल धरोहर, ज्ञान को सजोकर रखे जिससे कि विश्व की आने वाली पीढी भारत को हीनता की दृष्टि से देखना बन्द करे और गौरवपूर्ण व आदर सम्मान की दृष्टि से देखे।

## ग्रन्थ


- http://journal.ignouonline.ac.in
- https://hi.wikipedia.org
- https://erpublication.com>
- https://rajbhawan.rajasthan.gov.in
- https://grimt.co.in
- https://www.alliance.edu.in